International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती का भारतीय समाज में योगदान: एक अध्ययन

कर्मवीर

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ. कुमारी सुमन

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

सारांश

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान शक्षा वद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्र वद थे। दयानन्द सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान आर्यसमाज की नींव रखना था, जिसकी वजह से शक्षा व धर्म के क्षेत्र में क्रान्ति आई। स्वामी दयानन्द सरस्वती सबसे महत्वपूर्ण सुधारक थे और आध्यात्मिक शक्ति पुंज के रूप में पहचाने जाते हैं। दयानन्द की दर्शनशास्त्र उनके तीन प्र सद्ध योगदानों के लए जाना जाता है 'सत्यार्थ प्रकाश' 'वेद भाष्य भू मका' और 'वेद भाष्य। आर्य पत्रिका का संपादन भी उनके द्वारा कया गया जो क उनके सामाजिक एवं धा र्मक वचारों को प्रद र्शत करती है। स्वामी दयानन्द महान आर्यसमाज के संस्थापक होने के साथ-साथ आधुनिक भारत के राजनीतिक वचारों की एक महत्वपूर्ण स्तम्भ भी थे। दयानन्द भारतीय आर्य संस्कृति के सबसे बड़े पुरोधा थे। वे मूर्तिपूजा जातिवाद के कर्मकाण्डों, बाल ववाह, जातिप्रथा एवं छोटे बच्चों की हत्या आदि के वरोधी थे। वे स्त्रियों की आजादी तथा वांछित वर्ग की महिलाओं के उत्थान के पक्ष में थे। वेदों तथा हिन्दूओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस्लाम तथा ईसायत का वरोध कया तथा शु द्ध आन्दोलन का समर्थन कया। दयानन्द ने राजनीतिक वचार भी व्यक्त कये। राज्य की थ्योरी का वर्णन, सरकार का गठन, सरकार के कार्य तथा कानून का शासन आदि में महत्वपूर्ण वचार प्रस्तुत कये।

प्रस्तावना

भारत की सामाजिक संरचना, वर्ण निर्धारण तथा जाति-व्यवस्था की चन्ता वैदिक शास्त्रकारों को थी। इसी चन्ता के कारण भगवान बुद्ध ने जाति-प्रथा को चुनौती दी थी। आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गाँधी ने भी इसके ऊपर चन्ता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्त की है। सामाजिक संरचना की उपरोक्त पृष्ठभू म में स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक आन्दोलन एवं सामाजिक सुधारों की जानकारी जरूर होनी चाहिए।

जब स्वामी दयानन्द पूरे भारत का भ्रमण कर रहे थे तो उन्होंने देखा क भारतीय समाज मुख्यतः हिन्दू समाज की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी। जातीय प्रथा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी थी और ब्राह्मण वर्ग द्वारा अपनी श्रेष्ठता को बनाकर रखने के लए तरह-तरह के उपाय कये जा रहे थे। शूद्रों की स्थिति अत्यन्त ही दयनीय हो चुकी थी एवं स्त्रियों के साथ पशुवत व्यवहार कया जाता था। उन्हें न तो शक्षा ग्रहण करने का अ धकार था न ही समाज में खुलकर अपनी बातों को रखने का अ धकार था। ऊपर से बाल-- ववाह, बहु ववाह, वधवा ववाह निषेध, सती प्रथा, पर्दा प्रथा अस्पृश्यता, अन्याय, सामाजिक दुराव, पाखण्डवाद, मूर्तिपूजा, निरर्थक कर्मकाण्ड, अन्ध वश्वास, धर्म के नाम पर शोषण एवं अत्याचार जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही थी। हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अन्ध वश्वासों का फायदा उठाकर मुसलमान एवं ईसाई धर्म प्रचारक हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर रहे थे। स्वामी दयानन्द ने इन सभी घटनाओं का बड़ी ही सूक्ष्मता से अवलोकन कया और पाया क वेदों में इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध एवं बाध्यता नहीं थी बल्कि पुराणों के प्रादुर्भाव के पश्चात् इस प्रकार की बुराइयां हिन्दू समाज में प्रकट हुई। स्वामी जी के अनुसार वेद के वरूद्ध जो भी हो रहा था, वह गलत था और जनकल्याण के वपरीत था।

मह र्ष दयानन्द सरस्वती धर्म मर्मज्ञ, आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक और राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचारक के रूप में अ धक प्र सद्ध है। परन्तु इन सब कार्यों के लए इन्होंने शक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन कये थे इस लए ये शक्षाशास्त्री के रूप में भी प्र सद्ध है। दयानन्द जी प्राचीन भारतीय शक्षा पद्धति के सबसे बड़े समर्थक थे। इन्होंने अंग्रेजों के माध्यम से ही जाने वाली अंग्रेजी शक्षा का वरोध कया और प्राचीन परम्परानुसार वेद, उपनिषद् और स्मृतियों की शक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कोई नया सम्प्रदाय नहीं चलाया अ पतु उनका उद्देश्य तो वैदिक धर्म को आगे बढ़ाना था।

ऐसी शक्षा का भण्डार स्वामी दयानन्द के शै क्षक वचारों में देखा जा सकता है। शक्षा शास्त्र के वद्वान् आज भी अपने वषयों का अध्ययन स्वामी दयानन्द से प्रारम्भ करने में गौरव की अनुभूति करते है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी दयानन्द जी ने क्रांति की अपेक्षा सुधार को अपनाया। उन्होंने वेदों की भाषा सही करने का बीड़ा उठाया और वैदिक धर्म का सच्चा रूप सबके सामने रखने का प्रयास कया। वैदिक धर्म के प्रचार के इन्होंने **1875** ई. में आर्य समाज की स्थापना की।

स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण मानते थे। वे पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते है। उनके अनुसार भारतीय समाज की हीन अवस्था का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है क इस समाज में नारी का सम्मान पूर्ण स्थान नहीं रह गया है। वे नारी और पुरुष के अ धकारों की पूर्ण समानता स्वीकार करते है पर दोनों के कार्यक्षेत्रों का वभाजन भी मानते है।

स्वामी दयानन्द ने सत्य को ही धर्म का एक रूप माना है और उनकी दृष्टि में धर्म वही हो सकता है जो श्रेष्ठ मानव मूल्यों की रचनात्मक प्र क्रया को गतिशील रखने में हो सके। बाद के समन्वयवादियों और अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने दयानन्द को क रपंथी और खण्डन-मण्डन करने वाले सुधारक के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है क उनके जैसा उदार मानवतावादी नेता दूसरा नहीं रहा है। उन्होंने धर्म की सदा व्यापक परिकल्पना सामने रखी है। वे धा र्मक सम्प्रदायों को स्वीकार कर शुद्ध मानव मूल्यों पर प्रतिष्ठित धर्म को स्वीकार करने के पक्ष में रहे है। इस दृष्टि से वे भारतीय सन्तों के समान उदार व व्यापक दृष्टिकोण के माने जाते है। परन्तु संतों का दृष्टिकोण मुख्यतः आध्यात्मिक जीवन तक सी मत था। जब क दयानन्द के सामने भारतीय जन समाज के सर्वांगीण वकास का व्यापक लक्ष्य था। उनका धा र्मक उद्देश्य बहुत कल्याणकारी और व्यापक था। वस्तुतः उन्होंने समाज के सामने दो महत्वपूर्ण बात रखी थी। प्रथम यह क मूल सत्य तथा मानवीय मूल्यों की सृजनशीलता से प्रेरित एक ही धर्म है। द् वतीय क ये धर्म तत्त्व संसार के सभी श्रेष्ठ धर्मों के मूल में निहित है। यह धर्मों की साम्प्रदायिकता है क जो उन्हें अलग रूपों में प्रकट करती है। इसके साथ अपने निहित स्वार्थी जुड़ जाते है और धर्म में अंध वश्वासों तथा जड़ताओं का आश्रय लेकर असत्य का प्रवेश होता है।

उन्होंने इस लए बार-बार इस बात पर जोर दिया है क सभी धर्म के लोग शुद्ध मानवीय धर्म का पालन कर सकते है। क्यों क कसी धर्म का इससे वरोध नहीं हो सकता है और कोई भी धर्मावलम्बी आर्य-धर्म अर्थात् श्रेष्ठ मानव धर्म का पालन कर सकता है। धर्म जीवन का पर्याय कभी नहीं बना, यह उनके द्वारा 'आर्य समाज' की स्थापना से भी सद्ध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

होता है। आर्य-समाज कभी कसी धर्म का रूप नहीं ले सकता। यह उनकी इच्छा और वश्वास का ही परिणाम था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मानव मूल्यों पर प्रतिष्ठित धर्म की जो व्यापक तथा सृजनशील व्याख्या की थी, वह आज के भारत में अनेक धर्मों के स्वस्थ, सहज और रचनात्मक समन्वय की उ चत भू मका है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का शक्षा दर्शन

स्वामी दयानन्द ने बहुमुखी शक्षा का उपदेश दिया है। उन्होंने सामान्य शक्षा के साथ-साथ धा र्मक और व्यावसायिक शक्षा आवश्यक मानी है। धा र्मक शक्षा इस लए आवश्यक है क्यों क उसके बिना चरित्र का वकास नहीं हो सकता। धा र्मक शक्षा के लये दयानन्द ने देश में, वशेषतया उत्तरी भारत में, आर्य समाजों और गुरुकुलों की स्थापना की। आर्यसमाज एक व्यवस्थित संस्था है। यह वैदिक वद्यालयों की देखरेख करता है। **1886** में लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज तथा **1902** में कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना हुई। यह गुरुकुल आज स्वतंत्र वश्व वद्यालय है। इसके अतिरिक्त ज्वालापुर और वृन्दावन में गुरुकुलों की स्थापना की गई। दयानन्द की शक्षा के अनुसार कन्याओं के लये पृथक गुरुकुल है, जिनमें देहरादून, बड़ौदा तथा सासनी के गुरुकुल महत्वपूर्ण है। आजकल लगभग प्रत्येक जिले में और अ धकतर बड़े-बड़े नगरों में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज और आर्य-पुत्र पाठशाला तथा आर्य-पुत्री पाठशालायें दयानन्द के उपदेशों का प्रचार कर रही है। इस प्रकार दयानन्द ने केवल जन- शक्षा के व्यापक प्रचार का समर्थन ही नहीं कया, बल्कि आर्यसमाज के रूप में एक ऐसे संगठन की स्थापना की जिसने उनके वचारों के आधार पर देश में शक्षा फैलाने का भी प्रयास कया।

स्वामी दयानन्द का शक्षा दर्शन प्राचीन वैदिक शक्षा-दर्शन है, यद्य प वैदिक शक्षा दर्शन की व्याख्या उनकी अपनी है। जिस समय उन्होंने अपने उपदेश दिए, उस समय देश में ईसाई और मुस्लिम धर्म परिवर्तन की गंभीर समस्या थी। दयानन्द ने हिन्दु समाज को टूटने से बचाया और स्त्रियों को समाज में फर से सम्मानित स्थान प्राप्त कराया। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव से हिन्दु संस्कृति की रक्षा की और प्राचीन भारतीय हिन्दू मूल्यों, वचारों और व्यवस्थाओं को बनाये रखने के लए अत्य धक परिश्रम कया है। समकालीन भारतीय शक्षा दर्शन में उनके वचारों का शाश्वत् महत्व है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक वचार

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक वचारों में प्रमुख यह है क वे हिन्दू समाज को सामाजिक कुरीतियों, अंध वश्वासों एवं कुप्रथाओं से मुक्त कराना चाहते थे। वे यह मानते थे क हिन्दू समाज कुरीतियों एवं सामाजिक बुराइयों, धा र्मक अंध वश्वासों में डूबा हुआ है। इसे उन बुराइयों से मुक्त करने की आवश्यकता है।

उन्होंने जाति प्रथा का घोर वरोध कया। सारा हिन्दू समाज इसी प्रथा के कारण छिन्न-भन्न हो रहा था। द लत वर्ग न तो मंदिरों में प्रवेश पा सकते थे और न वेदों का अध्ययन कर सकते थे। समाज को जातिप्रथा एवं अस्पृश्यता से मुक्त करने के लए समाज को उन्नत व सशक्त बनाने की आवश्यकता थी। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को कर्म पर आधारित माना है, न क जन्म पर।

उन्होंने बाल ववाह, दहेज प्रथा जैसी प्रथाओं का वरोध कया है। उन्होंने सर्वप्रथम बाल-ववाह के वरोध में ववाह के लए लड़कों की आयु **25** वर्ष और लड़ कयों की आयु **16** वर्ष निश्चित की। दहेज प्रथा को समाज का अ भशाप बताते हुए उसके उन्मूलन हेतु प्रयास कया।

वधवाओं के पुन र्ववाह हेतु उन्होंने सार्थक व स क्रय प्रयास कये। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन को शु द्धकरण के माध्यम से पुनर्गठित कया। हिन्दू धर्म में वापसी के लए शु द्ध आन्दोलन चलाया। स्वामीजी ने ऐसे सहस्त्र लोगों को ईसाई धर्म से हिन्दू धर्म में प्र वष्ट कराया। दयानन्द ने नारी शक्षा तथा उनके अ धकारों का समर्थन कया। उन्होंने पर्दा प्रथा तथा नारी शक्षा की उपेक्षा का घोर वरोध कया। आर्यसमाज के माध्यम से कन्या स्कूल खोलने तथा स्त्री शक्षा के प्रचार का कार्य कया। बाल-ववाह, दहेज प्रथा आदि के वरूद्ध आन्दोलन चलाया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक वचार

स्वामी दयानन्द सन्यासी एवं कर्मयोगी थे। वे भारतीय राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। वे सन् **1857** के स्वतंत्रता संग्राम के स क्रय कार्यकर्ता थे। वे ऐसा बौ द्धक जागकरण चाहते थे, जो आधुनिक युग के अनुरूप गुलाम भारतीयता को सब बंधनों से मुक्त कराये। उन्होंने स्वराज्य का उद्घोष करते हए 'स्वशासन' एवं 'स्वराज्य' की मांग उठायी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वे भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति पर गर्व महसूस करते थे। इसी भारतीयता को वे गुलामी से मुक्त कराना चाहते थे, ता क उस पर गर्व कया जा सके। उन्होंने स्वराज्य एवं लोकतंत्र की मांग की। राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी का समर्थन कया। आ र्थक स्वतंत्रता हेतु स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया।

निष्कर्ष

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धा र्मक, सामाजिक, राजनीतिक वचारों की अज्ञान निंद्रा में सोये हुए भारतवा सयों को पुनःजागृत कया। **10** अप्रैल **1875** को आर्य समाज की स्थापना कर राष्ट्रीय पुर्नजागरण का कार्य कया। मानवता के लए कये गये उनके कार्य निःसन्देह महान् थे। लोकमान्य तिलक ने उनके वषय में लखा है "ऋ ष दयानन्द दिव्य दृष्टि वाले थे, जो भारतीय आकाश पर अलौ कक आभा में चमके और गहरी निंद्रा में सोये हुए भारत के लोगों को जागृत कर गये। वे स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक एवं मानवता के उपासक थे।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दयानन्द, स्वामी, सत्यार्थ प्रकाश।

2. मल्होत्रा, शान्ता, स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक वचार, के.के. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, **2001.**

3. चैधरी, एस.के, ग्रेट पॉ लटिकल वचारक स्वामी दयानन्द सरस्वती, सोनाली पब्लिकेशन, नई दिल्ली, **2008**

4. उपाध्याय, गंगा प्रसाद फलासफी ऑफ दयानन्द, इलाहाबाद, गंगा ज्ञान मंदिर, **1955.**

5. प्रकाश वश्व; लाइफ एण्ड टी चंग ऑफ स्वामी दयानन्द, इलाहाबाद, कला प्रेस, **1935.**

6. शर्मा, डॉ. रामनाथ, भारतीय शक्षा दर्शन, आगरा, वनोद पुस्तक मंदिर, **1971,**